8

भाषा को बहने दीजिए

कुमुद पुरोहित*

प्रस्तुत आलेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के आलोक में भारत की बहुभाषायी विपुलता एवं विविधता को कक्षाओं में पोषित करने की आवश्यकता पर चर्चा करता है। यह आलेख बच्चों में ज्ञान, समझ एवं कौशलों के अर्जन हेतु उनके द्वारा बोले जाने वाली भाषा में अभिव्यक्ति एवं संवाद के महत्व को भी रेखांकित करता है। विलुप्त होती भाषाओं के संरक्षण तथा उनमें व्याप्त लोकज्ञान परंपरा एवं संस्कृति को सहेजने में कक्षाओं में बच्चों की भाषाओं का निर्बाध एवं स्वतंत्र बहना एक अनिवार्य आवश्यकता है।

भाषा बहता नीर है; भाषा जीवंत है, इसमें गति है, लय है, प्रवाह है, विस्तार है। यह प्राचीन होते हुए भी नवीन है। भाषा हमारी अद्वितीय साझी सांस्कृतिक, सामाजिक विरासत है। 'कुछ न कहो' से लेकर 'सीखो न नैनो की भाषा' तक हालाँकि मुखर भाषा की ज़रूरत नहीं पर फिर भी संदेश संप्रेषित हो रहा है। आखिर भाषा की ज़रूरत क्या है या कौन-सी भाषा बोली जाए? क्या भाषा संवाद है या अभिव्यक्ति? क्या भाषा सृजन है या नए ज्ञान का आधार? संस्कृति की परिचायक है या भावों का वाहक? भाषाएँ कैसे और कब बनती हैं? भाषाएँ कैसे निखरती हैं और सँवरती हैं और कब धीरे-धीरे खामोश होते हुए एक दिन अचानक गुम हो जाती हैं? बच्चों की स्कूल की भाषा और घर की भाषा में अनबन क्यों है? भारत की बहुभाषायी विविधता कक्षाओं में स्थान क्यों नहीं बना पाती? क्या ज्ञान, समझ और कौशलों के अर्जन में और अधिग्रहण में भाषा की कोई भूमिका है? क्या भाषा और संज्ञान में कोई संबंध है? और इन सब सवालों में सबसे महत्वपूर्ण सवाल, कक्षा में प्रयोग की जाने वाली भाषा क्या हो, बच्चों की भाषा या बहुभाषा? यह लेख इन सभी सवालों को टटोलने का प्रयास करता है।

मानव विश्व के समस्त प्राणियों में इस मायने में अद्भुत है कि वह सबसे मुखर जीव है। भाषण के माध्यम से संप्रेषण करने की योग्यता तथा उससे सीखने और सृजनात्मक चिंतन करने की मनुष्य की क्षमता अद्वितीय है। जन्म के प्रारंभिक रुदन से प्रारंभ हुआ मनुष्य का प्रथम संवाद, जटिल भाषिक संरचनाओं का अनुभव और अनुकरण करते हुए प्रभावी और प्रेरित

*व्याख्याता, शिक्षा विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान 313 001

करने वाली भाषिक अभिव्यक्ति में विकसित हो जाता है। भाषा मानव संवाद मात्र नहीं है। यह अंत:क्रिया, सृजन और ज्ञान निर्माण का आधार भी है। भाषा वह सेतु है जिसपर से होकर विचार दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर बहते हैं। भाषायी विविधता वाले देश में संपर्क की भाषा महत्वपूर्ण है, हर भाषा में परिवेश और पर्यावरण से जुड़ा सामूहिक ज्ञान, स्मृति एवं परंपराएँ होती हैं। हज़ारों वर्षों में विकसित तथा समृद्ध हुर स्थानीय भारतीय भाषाओं का संरक्षण हमारी संस्कृति की अनूठी धरोहर को अक्षुण्ण रखने के लिए ज़रूरी है।

हमें अपनी भाषाओं को सहेजने, सँवारने और आने वाली पीढ़ियों को उसी समृद्धता से सौंपने की ज़रूरत है। भारतीय लोक भाषा सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार भारत में बोली जाने वाली कुल 780 भाषाओं में से लगभग 400 भाषाएँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। भारत में बोली जाने वाली लगभग 10 प्रतिशत भाषाएँ अगले 50 वर्षों में विलुप्ति के कगार पर होंगी जिनमें से अधिकतर तटीय भाषाएँ शमिल हैं। जो भाषा लिखी ही नहीं गई उस भाषा के अंतिम जानकार की मृत्यु होने पर उस भाषा का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। एथेनेलोग के आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में विश्व के 196 देशों में बोली जाने वाली 7117 भाषाओं में से 46 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या कम है। भाषाविदों का अनुमान है कि अगली सदी तक 3000 भाषाएँ समाप्त हो जाएँगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह उल्लेखित किया गया कि देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है। यूनेस्कों ने 197 भारतीय भाषाओं को "लुप्तप्राय" घोषित किया है। संविधान की 8वीं अनुसूची की 22 भाषाएँ कठिनाई का सामना कर रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय भाषाओं के पोषण और संरक्षण की ज़रूरत को पहचानते हुए, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम समेत कई महत्वपूर्ण अनुशंसाएँ की हैं, जिनमें स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर भारतीय भाषाओं को एकीकृत करना, सभी भाषाओं में उच्चतर स्तर पर गुणवत्तापूर्ण अधिगम व प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह, भारतीय भाषाओं के शब्दकोशों और शब्द भंडार के अधिकारिक रूप से लगातार अद्यतन करने, भाषा शिक्षण को अनुभव-आधारित बनाए जाने, बहुभाषिकता तथा स्थानीय या मातृभाषा में शिक्षण शामिल है। इससे पहले भी शिक्षा पर निर्मित सभी नीतियों ने मातृभाषा में शिक्षण की सिफ़ारिश की है।

इसी का परिणाम है कि भारतीय विद्यालयों में 58–69 विभिन्न भाषाओं में शिक्षण शामिल है। लेकिन प्राथमिक कक्षाओं में संपर्क भाषा जो अक्सर हिंदी होती है को जल्द से जल्द सिखा दिए जाने की कवायद तथा अँग्रेजी माध्यम में शिक्षित करने के बढ़ते प्रचलन ने अन्य भाषाओं को हाँशिए पर धकेल दिया है। यूनेस्को के अनुसार, बच्चों की मातृभाषा शिक्षा की भाषा के रूप में चयनित नहीं होती। जब बच्चे विद्यालय आते हैं तो उनके पास पहले से ही समृद्ध भाषिक आधार होता है। वे केवल एक भाषा नहीं, बल्कि अक्सर अनेक भाषाएँ सीख लेते हैं, विद्यालय आने से पहले लगभग पाँच हज़ार अथवा उससे भी अधिक शब्दों को जानते हैं।

सभी बच्चे 3 साल तक अपनी भाषा की बुनियादी संरचना सीख लेते हैं, वे यह भी सीख लेते

हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का उपयोग किस प्रकार करना है। वे अपनी बात को अपने शब्दों में कहना, स्वयं सीख जाते हैं। लेकिन बच्चे जब स्कूल में आते हैं तो किताबों में छपे हुए अजनबी भाषा के शब्दों में उलझ कर रह जाते हैं। बच्चे की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में तालमेल का अभाव होने के कारण बच्चे कई वर्ष स्कूल में बिताने के बावजूद विषयों से संबंधित ज्ञान, समझ एवं कौशलों को ग्रहण नहीं कर पाते, क्योंकि ज्ञान का अधिग्रहण और कौशलों का सीखना भाषा की सहायता से होता है (कसेल बतंग और मेलनेब टेम्पोरल, 2018)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस सरोकार को सामने रखते हुए यह कहा गया है कि सरकारी और गैर-सरकारी आँकड़ों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय में बड़ी संख्या में शिक्षार्थियों ने जिनकी अनुमानित संख्या 5 करोड़ से भी अधिक है, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान भी नहीं सीखा है अर्थात ऐसे बच्चों में सामान्य लेख को पढ़ने, समझने और अंकों के साथ बुनियादी जोड़ व घटाव करने की क्षमता नहीं है। जिसका अर्थ इन बच्चों का छोटे अनुच्छेदों को पढ़कर समझ पाने और उससे जुड़े सवालों के जवाब दे पाने तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाने, अंकों की पहचान, जोड़, घटाव, गुणा व भाग जैसी संक्रियाओं व समाधान करने जैसी तमाम क्षमताओं का अभाव है। संख्या ज्ञान का उपयोग, अपने परिवेश की व्यावहारिक समस्याओं को समझने व कक्षा में हिंदी या अंग्रेजी जैसी मानक भाषा के इस्तेमाल की नियमबद्धता को थोड़ी छूट देकर बच्चों की भाषा के लिए जगह बनाई जानी चाहिए, क्योंकि भाषा केवल भाषा ही नहीं होती, उसमें बालक के परिवेश का पर्यावरण विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित व अन्य सभी ज्ञान निहित होते हैं। इसलिए बच्चों की अपने घर में बोली जाने वाली भाषा में समझ होने के कारण अगर प्रारंभिक कक्षाओं में वे पढ़ने व लिखने का कौशल अपने घर में बोली जाने वाली भाषा में अर्जित करते हैं तो यह अन्य भाषाओं तथा विषयों के भी सीखने में सहायक होगा।

अंबेडकर विश्वविद्यालय एवं असर द्वारा *इंडिया एर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इम्पेक्ट स्टडी* यह बताती है कि आँगनबाड़ियों में प्रारंभिक बाल प्रोत्साहन या विकास को जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए वह नहीं मिल पा रही है। शोध बताते हैं कि विद्यालयपूर्व शैक्षिक संस्थानों में भी प्रारंभिक आयु के बच्चों के साथ 'विद्यालय जैसी' गतिविधियाँ ही की जाती हैं और वे इन बच्चों को लचीली खेल-आधारित एवं विकास अनुरूप ऐसी गतिविधियाँ नहीं कराते जो नन्हें-मुन्हों के विकास के अनुरूप हों। ये बच्चे विद्यालयपूर्व शिक्षा में कई वर्ष बिताने के बाद भी कक्षा के लिए तैयार नहीं हो पाते। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी यह कहती है कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावास्था देखभाल और शिक्षा के सरोकार को प्रस्तुत किया है। इस लिहाज़ से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान, निपुण भारत, पूर्व-प्रारंभिक कक्षा (बालवाटिका) के लिए की गई अनुशंसाएँ स्वागत योग्य कदम है। नीति में वर्णित अनुशंसाओं की अनुपालना में हमें यह समझना होगा कि सीखने

की प्रक्रिया कोविड महमारी के दौर में और भी चुनौतीपूर्ण हो गई थी। सोलहवाँ *असर 2020 सर्वेक्षण* यह बताता है कि कोविड महामारी के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय में नामांकित नहीं होने वाले बच्चों की संख्या दुगुनी हो गई और नामांकित होने वाले बच्चों में भी कक्षा पहली और दूसरी में पढ़ने वाले एक तिहाई बच्चे कभी स्कूल गए ही नहीं, इसलिए पाँचवीं कक्षा तक की सभी कक्षाओं में बच्चे की भाषा विषयों की सीखने की दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण हो जाती है और शिक्षकों को जैसा कि नीति में वर्णित है, विभिन्न भारतीय तथा स्थानीय भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली भाषा सामग्री विकसित करना, इन भाषाओं में अधिगम तथा प्रिंट सामग्री तथा शब्दकोश बनाना, कक्षाओं में बहुभाषी संस्कृति विकसित करना ज़रूरी है। बच्चों की भाषा और बहुभाषा के कक्षायी प्रयोगों के संज्ञानात्मक लाभ हैं। भाषा अवधारणाओं की समझ, विचार एवं चिंतन के लिए आवश्यक है।

भाषा और संज्ञान में सीधा संबंध है। बच्चे अपनी भाषा में अक्षरों को चिह्नित करते हैं, अर्थ गढ़ते हैं, विचार बुनते हैं व स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। एक अंजान भाषा में अजनबी शब्द को देखकर अपनी भाषा में उसका मानसिक अनुवाद कर समझना इस प्रक्रिया को जटिल, बोझिल व उबाऊ बना देता है, लेकिन क्या मातृभाषा या बच्चे की भाषाओं को कक्षा में बढ़ावा देना, संपर्क की भाषा (हिंदी) या सामाजिक आकांक्षाओं की भाषा (अंग्रेजी) को सीखने में बाधक नहीं होगा। शोध बताते हैं कि ऐसा नहीं होगा। क्यूमिंस ने अपने शोध में यह पाया कि वे बच्चे जिनका मातृभाषा ज्ञान अच्छा होता है, दूसरी भाषाओं और साक्षरता कौशलों को आसानी से अर्जित कर लेते हैं। एक बहुभाषी कक्षा में 2 से अधिक भाषाओं में अर्जित भाषा कौशल विद्यार्थियों में वाक्य संरचना, वाक्य निर्माण, समृद्ध शब्दकोश तथा अभिव्यक्ति के साथ-साथ उच्च स्तर की आलोचनात्मक समझ और रचनात्मकता का भी पोषण करते हैं, जो आज के दौर की माँग और शिक्षा के लक्ष्य भी हैं।

मनोविज्ञान में हुए शोध अध्ययनों में यह पाया गया है कि बहुभाषी विद्यार्थियों में बेहतर संज्ञानात्मक और गैर-संज्ञानात्मक कौशल होते हैं। विद्यालय में जब बच्चे पढ़ना सीख रहे होते हैं तो वे केवल एक किताब पढ़कर नहीं सीखतें, वे छपी हुई कहानियों और उनके चित्रों को देखकर अपने अर्थ गढ़ते हैं, वे स्वंय को कहानियों के पात्रों से जोड़ते हैं, सही गलत के नैतिक फैसले भी करते हैं और अपनी भाषा में उस कहानी को अपने दोस्तों को सुनाते भी हैं। उनके अंदर परिवेश या दिए गए संदर्भ विशेष में किसी अंजान भाषा के शब्द का अर्थ गढ़ने की योग्यता होती है, कहानी के पात्रों के उन भावों को जिन्हें शब्दों में नहीं लिखा गया, समझने की योग्यता विकसित होती है। अवधारणा निर्माण, चिंतन और अभिव्यक्ति के अपनी भाषा में सीखे गए कौशल उसे दूसरी भाषाओं को सीखने में भी मदद करते हैं। साक्षरता कौशल मात्र अक्षरों की पहचान और शब्द अर्थ नहीं है, बल्कि यह अपने अनुभवों को अक्षरों में जोड़कर उनकी व्याख्या करने में है, अपनी रोज़मर्रा की समस्याओं के समाधान में इस ज्ञान और कौशल का प्रयोग करने में हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्थानीय भाषाओं को अधिक व्यापक रूप में कक्षायी बातचीत और पढ़ने-लिखने तथा समझने

में प्रयोग करने की बात कही गई है। स्थानीय भाषा में बाह्य साहित्य लेखन व पुस्तकालय को समृद्ध करने की बात कही गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कक्षाओं में लागू करने के लिए कई प्रभावी दिशानिर्देश प्रस्तुत करती है। शिक्षकों को उन्हें समझने की ज़रूरत है, ताकि हम बच्चों में अपनी स्थानीय भाषाओं के प्रति गर्व की भावना विकसित कर सकें और उन्हें समृद्ध ज्ञान का आधार प्रदान कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थ

- ब्रिटिश ध्वनि विज्ञानी डी.बी. फ्राई ने टिप्पणी की है कि होमो लोकेंस शब्द (अर्थात बोलने वाला मनुष्य) मनुष्य प्रजाति के लिए होमोसेपियंस शब्द (बुद्धिमान) की तरह ही उपयुक्त होगा। लोकेंस शब्द वाक्पटुता से लिया गया है जिसका अर्थ है शक्तिशाली और प्रभावी भाषा। बच्चे और मनुष्य मूलतः स्वभाव से मुखर और सामाजिक होते हैं। अतः बच्चों को कक्षाओं में अपनी भाषाओं में बोलने के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध हों तथा निर्भय रूप से स्वयं को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता हो।
- भाषा बच्चों में विचार, अभिव्यक्ति और चिंतन हेतु भी महत्वपूर्ण है। कक्षाओं में बच्चों को अपने परिवेशीय अनुभव को प्रस्तुत करने के अवसर होने चाहिए।
- बच्चों में मौलिक चिंतन व रचनात्मकता के विकास हेतु स्वतंत्र व निर्बाध भाषिक आदान-प्रदान आवश्यक है। कक्षाओं में बहुभाषा साधक है, बाधक नहीं; संसाधन है, उलझन नहीं, अतः शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित करें कि विभिन्न भाषी विद्यार्थी कक्षा अंतःक्रिया के द्वारा समझें तथा एक-दूसरे को समझाएँ। विद्यार्थी अपनी भाषा में स्थानीय समृद्ध संस्कृति की महक लेकर आते हैं। हमारे लोकगीत, कथाएँ किवदंतियाँ, त्योहार व प्रथाएँ व लोक विधाओं को सहेजने हेतु बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है। सप्ताह में एक दिन बच्चों को अपनी संस्कृति को उनकी भाषा में साझा करने के अवसर प्रदान कर तथा उसका संधारण कर हमारी समृद्ध स्थानीय धरोहर को सहेजा जा सकता है। इससे अपनी अस्मिता खोते हुए लोकगीत व प्रथाएँ पुनर्जीवित हो उठेंगे।
- विद्यार्थियों की सहायता से स्थानीय भाषा का हिंदी शब्दकोश निर्मित किया जा सकता है इससे विद्यार्थियों की शब्द संपदा भी विपुल व विषद होगी। शिक्षकों द्वारा बच्चों की भाषाओं में विभिन्न विषय अवधारणा से संबंधित गुणवत्तापूर्ण अधिगम व प्रिंट सामग्री का निर्माण किया जा सकता है। बच्चों द्वारा अवधारणा निर्माण और उनकी उपलब्धि संवर्धन में यह सहायक सिद्ध होगा। शिक्षकों द्वारा बच्चों की सहायता से प्रत्येक विद्यालय में इस प्रकार की सामग्री निर्मित की जा सकती है।
- बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि विकसित कर हम उनमें छोटे अनुच्छेदों को पढ़कर समझने और उससे संबंधित सवालों के जवाब देने की क्षमता विकसित कर सकते हैं, इसकी शुरुआत उनकी अपनी भाषा में हस्तलिखित पुस्तकों का निर्माण कर कक्षा पुस्तकालय में रखकर की जा सकती है। और भी अच्छा हो अगर बच्चे स्वयं अपनी

भाषाओं में ऑडियो व लिखित सामग्री का निर्माण कर सकें।

- बचपन के प्रारंभिक वर्ष भाषा सीखने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। आँगनबाड़ी में बच्चों के पास चित्र वाली पुस्तकों की उपलब्धता, ढेर सारी खेल गतिविधियाँ एवं खूब सारी बातें करने के अवसर उनमें भाषिक क्षमताओं के विकास में सहायक हैं। आँगनबाड़ी में नियमित बाल अभिव्यक्ति सत्रों का नियमित आयोजन किया जा सकता है।
- कक्षाओं में कंप्यूटर, एनीमेशन व कहानी चित्र एवं कार्टून का प्रदर्शन कर इन पर चर्चा करवाई जा सकती है। बच्चों के लिए भित्ति पत्रिका एवं 'स्टोरी वॉल' बनवाई जा सकती है, जहाँ बच्चे अपनी भाषा में चित्र बनाकर ऊपर चर्चा कर सकें।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे विशेषकर दृष्टिबाधित बच्चे सामाजिक संपर्कों के अभाव में स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। कक्षा अभिव्यक्तियों में उनके स्वरों को आवाज़ देने की ज़रूरत है। शिक्षक सुनिश्चित करें कि बहुत प्रारंभिक कक्षाओं से ही विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर हों एवं वे सहभागिता करें। उनके लिए भूमिकाएँ तय हों तथा सहज रूप में उनकी सहभागिता का स्वागत हो जिससे उनमें आवश्यक आत्मविश्वास विकसित हो सके।

आशा है राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित कक्षा में भाषिक प्रयोग की अनुशंसाएँ बुनियादी साक्षरता कौशलों के साथ-साथ विद्यार्थियों में चिंतन व समस्या समाधान विकसित करने में प्रभावी सिद्ध होंगी। ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा को समझे और अपनी कक्षाओं में विभिन्न भाषाओं को स्वतंत्र रूप से बहने दें।

संदर्भ

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (असर 2019— बियोंड बेसिक्स) प्रथम. https://aud.ac.in/aser-report-2019.

क्यूमिन, जे. 2000. *बायलिंग्वल चिल्ड्रनस मदर टंग : वाय इज़ इट इम्पोरेटेंट फॉर ऐजूकेशन.* http://iteachilearn.com/cummins/mother.htm

कसेल, बतंग और मेलनब टेम्पोरल. 2018. लैग्वेज एटीट्यूड एंड इंग्लिश प्रोफिशिएंसी ऑफ ई.एस.एल. लरनर्स. *एशियन ई.एफ.एल. जर्नल.* 20(2), पृ.सं. 186–205. https://www.researchgate.net

जनभाषा-मातृभाषा में पढ़ाई शिक्षा को कैसे प्रभावित करती है. https://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/common-tongue-how-mother-tongue-instruction-influences-education-hindi.htm

बनर्जी, रुक्मिणी 2019. *बुनियाद की मज़बूती : प्राथमिक शिक्षा की चुनौती* https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/building-foundations-well-the-challenge-for-primary-education-hindi.html

भाषा— हिंदी. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. https://ncert.nic.in › pdf › syllabus

वाय मदर लैंग्वेज बेस्ड एजूकेशन ईज एसेंशियल. https://www.unesco.org/en/articles/why-mother language-based-education-essential

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार, नई दिल्ली.

स्कूल एनरोलमेंट ड्यूरिंग पैनडेमिक : एनुवल स्टेटस ऑफ ऐजूकेशन रिपोर्ट. https://www.thehindu.com/education/schools/school-enrolment-fell-during-pandemic-annual-status-of-education-report/article37549996.ece